© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 02 | January – March 2018

पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास समय की मांग

जितेन्द्र कुमार

एम. एस. सी जियोग्राफी बीएड़, नेट (जी आर एफ), सेट

पी. एच ड़ी (अध्ययनरत) – राजस्थान विश्विधालय (जयपुर)

सार – पर्यावरण एक भौतिक एवं जैविक संकल्पना है जिसमें पृथ्वी के जैविक एवं अजैविक घटकों को सम्मिलित किया जाता है। आज दुनिया के समक्ष पर्यावरण और इसका संतुलित चिंतन का प्रमुख विषय बन गया है। क्योंकि वर्तमान में पर्यावरण विघटन की समस्याओं ने ऐसा गंभीर रूप धारण कर लिया है। कि इससे समस्या प्राणी जगत के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया हैं एक और जहां नीवन प्रौद्योगिकी की खोज एवं औद्योगीकरण लोगों के जीवन स्तर में परिवर्तन आया है वहीं दुसरी ओर बढ़ती जनसंख्या वृद्धि से मनुष्य के दैनिक जीवन की आवश्यकताएं बढ़ी है। जिनकी पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भी तेजी से हुआ है। संसाधनों के अत्याधिक दोहन के कारण प्र्यावरण क्षरण हो रहा है तथा यह मानव जाति के लिए एवं उसकी उत्तरजीविता के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। चूंकि वन पर्यावरण संतुलन के महत्वपूर्ण तत्व हैं, किन्तु बढ़ते वनोन्मूलन की दर से पर्यावरण क्षरण की समस्या को बढ़ा दिया हैं इससे उत्पन्न होने वाले संकटों का प्रभाव संपूर्ण विश्व में, वनस्पति जगत एवं प्राणियों पर समान रूप से पड़ रहा हैं ऐसे समय में हम सभी को एकजुट होकर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने की सख्त जरूरत है।

कुंजी शब्द – पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, पर्यावण संतुलन ।

भूमिका – पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़– पौधें, जीव जन्तु मानव एवं उसकी विविध गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता है। प्रकृति पर विजय पाने की प्रतिस्पर्धा में आज की विज्ञान तकनीकी सभ्यता अपने सुख वैभव को बढ़ाने में उलक्षी हुई है तथा यह समझना ही नहीं चाहती कि मानव सवयं भी प्रकृति का ही प्राणी हैं मानव का प्रकृति पर वर्चस्व निरन्तर बढ़ता जा रहा हैं इस कारण मनुष्य तकनीकी सभ्यता की समृद्धि के लिए जिस दर से प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक उपयोग कर रहा है, जिससे अनेक साधनों पर विश्व पर्यावरण में परिवर्तन हो गया हैं पर्यावरण में तेजी से हुए बदलाव के प्रमुख कारक है।

1. निरन्तर एवं तीव्रगति से बढ़ती जनसंख्या
2. औद्योगीकरण
3. प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से दोहन
4. वन विनाश
5. कृषि में कीटनाशकों का अत्याधिक प्रयोग

6. जल प्रदुषण एवं वायु प्रदुषण
7. ग्लोबन वार्मिंग
8. हरित गृह प्रभाव
9. ओजान परत का क्षरण

पर्यावरण क्षरण पर्यावरण में उत्पन्न असंतुलन का परिणाम है जो मानवीय अथवा प्राकृतिक गतिविधियों के कारण होता है । पर्यावरण में अंसंतुलन यदि प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होता है तो वह प्रकृति द्वारा स्वतः नियंत्रित कर लिया जाता है किन्तु जब एक सीमा के बाद मानवीय हस्तक्षेप से पर्यावरण असंतुलित होता है तो प्राकृतिक उसे स्वतः नियंत्रित नहीं कर पाती। जिससे पर्यावरण क्षरण की समस्या उत्पन्न होती है

पर्यावरण संरक्षण – पर्यावरण संरक्षण से अभिप्रायः पर्यावरण की सुरक्षा करना है। संक्षिप्त रूप से पेड़ पौधें के संरक्षण एवं हरियाली का विस्तार करना पर्यावरण संरक्षण है किन्तु विस्तृत रूप से पर्यावरण संरक्ष से अभिप्राय पेड़ पौधों के साथ साथ जल, पशु–पक्षी एवं संपूर्ण पृथ्वी की रक्षा से है। पर्यावरण संरक्षण का समस्त प्राणियों के जीवन तथा पृथ्वी के समस्त प्राकृतिक परिवेश से घनिष्ठ संबंध है। अतः हमें प्रकृति के आवरण को सुरक्षित करना हैं पर्यावरण के संरक्षण से ही पृथ्वी पर जीवन का संरक्षण हो सकता है।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता – स्वच्छ वातावरण प्रकृति के संतुलन को बनाए रखता है साथ ही पृथ्वी पर जीवों की वृद्धि, उनके पोषण एंव विकास में मदद करता है। संपूर्ण ब्रह्मण्ड में केवल पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन संभव है। अतः पृथ्वी पर जीवन जारी रखने के लिए हमें हमारे पर्यावरण की मौलिकता को बनाए रखने की जररूत है। पर्यावरण के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। इसलिए हमें भविष्य में जीवन की संभावना सुनिश्चित करने के लिए अपने पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुरक्षित रखना चाहिए। जीवन के अस्तिव के लिए अत्यंत आवश्यक घटक पर्यावरण को मनुष्य की प्रकृति को नियंत्रित करने की इच्छा ने खतने में डाल दिया है। आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या अत्यंत गंभीर हो गई है जिससे प्रभावित कई प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर है।

सतत विकास का तात्पर्य आर्थिक विकास के साथ साथ पर्यावरण को सुरक्षित करना है। इसका उद्देश्य वर्तमान तथा भविष्य की पीढ़ियो के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखना है। इसके अलावा सततशीलता एक ऐसी स्थिति है जो हमेशा के लिए बनी रहे। जिसे बनाए रखने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार किया जाए जिससे पर्यावरणीय ह्रास न हो तथा प्रकृति का उसकी उत्पादन क्षमता से अधिक शोषण न हो। अतः प्राकृतिक संसाधनों के भण्ड़ार को वर्तमान स्तर या इससे अधिक बनाए रखना चाहिए।

सतत विकास की अवधारणा आर्थिक विकास नीतियों को पर्यावरण के अनूरुप बनाने पर जोर देती हैं। इसका उद्देशय पर्यावरण के विरुद्व चलने वाली विकास नितियों में परिवर्तन लाना है। " हमारा

भविष्य " नामक रिर्पोट से सतत विकास को ऐसा विकास कहा गया है जो भविष्य की पीढ़ीयों की आवश्यकताओं की पूर्ति से समझौता किए बिना वर्तमान आवश्यकताएं पूरी करता है। अतः ऐसा विकास जो हमारी आज की जरुरतों को पूरा करे, साथ ही आने वाली पीढ़ीयों की भी अनदेखी न करें। इस प्रकार सतत विकास का उद्देश्य न केवल सांमजस्य स्थापित है बल्कि यह एक परिवर्तन की प्रक्रिया है जिससे संसाधनों के दोहन, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास की स्थिति तथा सस्थागत परिवर्तनों के साथ–साथ भविष्य की आवश्यकताओं के भी अनुकूल बनाया जा सके।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदम–

1. **पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986**– इसे मानव पर्यावरण की सुरक्षा करने तथा मानव जाति को आपदा से बचाने के लिए पारित किया गया। यह पर्यावरण गुणवता मानक निर्धारित करने, औद्योगिक क्षेत्रों को प्रतिबंधित करने, हानिकारक तत्वों का निपटारा करने, मामले की जांच एवं शोध कार्य करने, प्रभावित क्षेत्रों का तत्काल निरिक्षण करने का अधिकार देता है। इसका मुख्य उद्देश्य घातक रासायनों की अधिकता को नियंत्रित करना व पारिस्थितक तंत्र को प्रदूषण मुक्त रखने का प्रयत्न करना है।

2 **भारतीय वन अधिनियम, 1927** – इसके तहत सुरक्षित वन, संरक्षित वन अथवा ग्राम वन घोषित किया जाता है। इसके अलावा यह जंगल अपराध को परिभाषित करता है अर्थात यह परिभाषित करता है कि हम आरक्षित वन के अन्दर कौन से कार्य निषिद्व कृत्यों के अंतरगर्त आते हैं।

3. **भारतीय वनजीव संरक्षण अधिनियम, 1972**– यह अधिनियम जंगली जानवरों, पक्षियों तथा पौधों को संरक्षण प्रदान करता है। इसका उद्देश्य वन्यजीवों के अवैध शिकार एंव व्यापार पर रोक लगाना है। इस अधिनियम के उल्लंघन के लिए कठोर दण्ड़ एवं जुर्माने का प्रावधान है।

4. **राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण अधिनियम, 2010**– इसके तहत एक राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण की स्थापना की गई है। इसकी स्थापना पर्यावरण से संबधित कानूनी अधिकारों के प्रर्वतन एंव व्यक्तियों तथा सम्पति के नुकसान के लिए क्षतिपूर्ति करने, पर्यावरण संरक्षण एवं वनों तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबधित मामलों के प्रभावी तथा त्वरित निपटान के लिए की गई थी। यह पर्यावरणीय विवादों को सुलझााने के लिए आवश्यक विशेषज्ञता से युक्त विशिष्ट निकाय है।

निष्कर्ष – आज मनुष्य तकनीकी खोजों के बल पर वैज्ञानिक युग में प्रवेश कर लिया हैं किन्तु इस प्रगति के दौर में मनुष्य ने पर्यावरण को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया हैं एक तरफ जहां तकनीकी की चकाचौंध है तो दुसरी तरफ स्वयं मानव के जीवन पर संकट के गहरे बादल छाए हुए हैं ऐसे समय में प्यावरण को बचाने के लिए समस्त मानव प्रजाति को एकजुट होकर कार्य करने की जरूरत हैं प्रत्येक छोटे छोटे प्रयास से हम बिगड़ते पर्यावरण की दिशा में एक बड़ा सकारात्मक बदलाव ला

सकते हैं हमें सतत विकास की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए वह सुनिश्चित करना होगा कि मानव प्रगति से भविष्य में हमारे पर्यावरण को कोई नुकसान ना हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. NCER ब्सें 12जी जीव विज्ञान – ''जीव तथा पर्यावरण'' अध्याय
2. द हिन्दु, न्यूज पेपर – 19.06.2015 पृष्ठ संख्या – 9–10
3. http://www.slideshare.net/तेज किरण/जनसंख्या वृद्धि का प्र्यावरण पर प्रभाव
3. WECD "Our Common Future" नामक रिपोर्ट